शिक्षा

दृष्टिकोण और दिशा

- प्रो. के. नरहरि

शिक्षा

दृष्टिकोण और दिशा

लेखक

प्रो. के. नरहरि

अनुवादक

पी.एस. चन्द्रशेखर

प्रकाशक

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

शैक्षिक महासंघ सदन, 606/13,

कृष्णा गली नं.9, मौजपुर, दिल्ली-110053

दूरभाष : 011-22914799

website: www.abrsm.in, www.abrsm.co.in

Email: abrsmdelhi@rediffmail.com, abrsmdelhi@gmail.com

शिक्षा : दृष्टिकोण और दिशा

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

❖ चतुर्थ संस्करण : महाशिवरात्री, फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी
विक्रम संवत् 2070, युगाब्द 5115

❖ सहयोग राशि : 25/-

❖ अक्षर संयोजन :
सागर कम्प्यूटर्स, जयपुर

❖ मुद्रक :
कुमार एण्ड कम्पनी, जयपुर

❖ प्रकाशक :
अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

प्रकाशकीय

माँ भारती जगत जननी कहलाती है। यह बात सुनकर किसी भी भारतीय को हर्षित, रोमांचित होना चाहिए, पर ऐसा होता नहीं। इसका मुख्य कारण है–भारतीय शिक्षा पद्धति में दोष एवं कमियाँ। यह हमारा दुर्भाग्य ही है कि हमारे वे नेता जिनके हाथों में स्वतंत्र भारत की पतवार है, जिन पर समाज को सदा जागरुक रखने की जिम्मेदारी है, वे गाफिल हैं और मूल उद्देश्यों से भटक गए हैं। वे सब मिलकर हमारे राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक आदि सभी क्षेत्रों को विदेशों एवं पर संस्कृतियों का दास बनाते जा रहे हैं। इसके फलस्वरूप हमारी संस्कृति, परम्पराएँ, जीवन के आदर्श सब कुछ उपेक्षा के शिकार बन गए हैं। आज भारत में मातृभूमि के स्वतंत्रता संग्राम के महान यज्ञ में प्राणोत्सर्ग करने वाले बलिदानी वीरों की प्रेरणादायी जीवनियाँ एवं त्याग जनसामान्य को बताने तथा समझाने की दिशा में कोई प्रयत्न नहीं किया गया, न ही हो रहा है। इसी कारण नई पीढ़ी आजादी का अर्थ और उसकी कीमत समझ नहीं पा रही है। यही कारण है कि हमारी आज की युवा पीढ़ी तथा छात्रों के मन व जीवन में सामाजिक जागरुकता, मानवीय संवेदना, देशभक्ति आदि के भावों की कोई महत्ता व स्थान नहीं है। उनमें स्वाभिमान की ज्योति प्रज्ज्वलित की व्यवस्था का ही लोप हो जाने के कारण आज मातृभूमि के सर्वांगीण विकास के लिए काम करने वाले नि:स्वार्थ सेवकों का अभाव होता जा रहा है।

भारत भूमि कभी धर्मभूमि, कर्मभूमि, त्यागभूमि समझी जाती थी। किन्तु आज की इस दयनीय स्थिति का कारण क्या हो सकता है? सुप्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता प्राध्यापक के. नरहरि ने इस छोटी पुस्तिका में इन्हीं सब सवालों का पूर्ण निष्पक्षता से जवाब देने का प्रयास किया है। प्राध्यापक के. नरहरि निरंतर अठारह वर्षों तक शिक्षा क्षेत्र से कर्नाटक विधान परिषद के लिए चुने जाते रहे हैं। आपने वर्तमान शिक्षा के स्वरूप व पद्धति के विषय पर गहरा चिंतन–मनन किया है। आपकी एक मात्र कामना यही है कि शिक्षा हमारे राष्ट्र निर्माण की नींव बने। इसी उद्देश्य को लेकर आप अनेक राष्ट्रव्यापी शिक्षा कार्यक्रमों में भाग लेते रहे हैं तथा मार्गदर्शन करते रहे हैं। लेखक के अपने अनुभव तथा चिंतन–मननरूपी भट्टी में परिपक्व विचार पठनीय है। इस पुस्तिका में समस्त भारतीयों के लिए श्रेयस्कर योजनाएँ, मार्गदर्शन संग्रहित है।

प्रो. के. नरहरि ने दिनांक 2.8.2001 को कर्नाटक विधान परिषद में 'शिक्षा की वर्तमान स्थिति' पर बोलते हुए ये विचार व्यक्त किए थे। हमने प्रो. के. नरहरि से अनुरोध किया कि इन विचारों को कुछ विस्तार के साथ पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने से देश का शिक्षा क्षेत्र लाभान्वित होगा। हमारे अनुरोध को स्वीकार करते हुए उन्होंने जो कुछ लिखकर हमें दिया, वह

पुस्तिका के रूप में कन्नड़ में प्रस्तुत किया था।

प्रो. के. नरहरि की कन्नड में लिखित पुस्तिका कर्नाटक प्रदेश भर में बहुत जनप्रिय हुई। उनके अन्य भाषा-भाषी मित्र भी उनके इन सुलझे हुए विचारों से अवगत होना चाहते थे, विशेषकर हिन्दी भाषी मित्र। उन सब का प्रबल आग्रह था कि इस पुस्तिका का शीघ्रातिशीघ्र हिन्दी में रूपान्तरण होना चाहिए। इन सन्मित्रों के आग्रह का सम्मान करते हुए अब हम इसका हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत कर रहे हैं।

कर्नाटक के वरिष्ठ पत्रकार श्री.पी.एस. चन्द्रशेखर से हमने इसका हिन्दी अनुवाद करने का आग्रह किया तो वे सहर्ष तैयार हो गए तथा अल्प समय में ही उन्होंने यह अनुवाद तैयार कर दिया। श्री चन्द्रशेखर के परिचय में इतना कहना ही पर्याप्त है कि वे एक मात्र ऐसे कन्नड़ भाषी हिन्दी पत्रकार हैं जो 50 वर्षों से हिन्दी में पत्रकारिता कर रहे हैं और वे सन् 2000 के गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार (राष्ट्रीय पुरस्कार) से सम्मानित हैं। हम उनके आभारी हैं कि उन्होंने इतने कम समय में यह अनुवाद तैयार करके दिया है।

यदि राष्ट्र के समस्त हितैषी इसे पढ़कर प्रेरणा लेंगे तो हम अपना श्रम सार्थक समझेंगे।

– प्रकाशन समिति

शिक्षा का हेतु

एक दैनिक पत्र में किसी आई.ए.एस. अधिकारी का पत्र छपा था। मैंने उसे पढ़ा। वह इस प्रकार था : छुट्टी के दिन वे अपने परिवार के साथ नदी तट पर पिकनिक पर गए हुए थे। कुछ समय तक वे इधर-उधर घूमते हुए आनंद मना रहे थे कि उनको एक पेड़ दिखाई पड़ा। उस पर बयों ने बहुत से घोंसले बना रखे थे। यह सब जानते हैं कि बया अपने अंडे सेने और नन्हें बच्चों को पालने के लिए लम्बा घोंसला बनाती है। इन घोंसलों को देखकर उस अधिकारी का मन ललचा गया। उनके मन में कुछ घोंसले ले जाकर अपने घर के शो केस में रखने की इच्छा जाग्रत हुई। पर घोंसले काफी ऊँचाई पर थे। इसलिए वे उस पेड़ से तोड़ नहीं सके। तभी उन्हें फटे-पुराने कपड़े पहने, अपने हाथ में डंडा लिए एक चरवाहा बालक दिखाई पड़ा। अधिकारी ने उस चरवाहे को बुला कर घोंसला तोड़कर उन्हें देने को कहा। पर उस बालक ने उनसे पूछा कि आपको घोंसला क्यों चाहिए? अधिकारी ने जबाव दिया कि घोंसले सुन्दर हैं, इसलिए वे उसे ले जाकर अपने घर में रखना चाहते हैं। बालक ने घोंसला तोड़ने से इन्कार कर दिया। अधिकारी के पैसा देने के प्रलोभन के बावजूद भी लड़के ने साफ मना कर दिया। इसका कारण जानने के लिए अधिकारी के बार-बार आग्रह करने पर लड़के ने कहा, ''मान लीजिए, मैं घोंसला तोड़ कर आप को दे देता हूँ। हो सकता है, उस घोंसले में कोई चिड़िया अपने अंडे, बच्चे न पाकर दुःखी होगी, चीखेगी, चिल्लाएगी, घोंसला ढूँढते हुए चारों ओर भटकेगी। इस कारण से चिड़ियों को जो वेदना होती है वह देख कर मैं नहीं सहन कर सकता हूँ। इसलिए मैं घोंसला तोड़कर नहीं दूँगा, न ही आप को तोड़ने दूँगा।'' यह कहते हुए वह पेड़ के पास खड़ा हो गया। अपने पत्र के अंत में उस आई.ए.एस. अधिकारी ने लिखा है, कौन शिक्षित हैं (Who is educated)? आई.ए.एस. उत्तीर्ण मैं, या अंगूठा टेक वह बालक? वह सोचने लगा कि उस अनपढ़ बालक में जो संवेदना थी वह आई.ए.एस. उत्तीर्ण मुझमें क्यों नहीं है, वह लड़का मुझसे बढ़कर शिक्षित है। अपने अंडे-बच्चे को न पाकर चिड़िया को होने वाली वेदना की अनुभूति उस अशिक्षित चरवाहे बालक को हुई। उस चरवाहे की यह प्रतिक्रिया सद्भाव, चेतना का प्रकट रूप है। ऐसी संवेदना ही मानव के सद्विचारों, सद्व्यवहारों की प्रेरणास्रोत है।

हमारे प्रत्येक कार्य या योजना के दो रूप होते हैं- भाव एवं तदनुसार कृति। भाव के अनुसार कृति का होना जरूरी है। दूसरों के कष्ट को देखकर होने वाली अनुभूति भावना से संबंधित है जबकि उसके निवारण के लिए किए जाने वाला कार्य तदनुसार कृति है। भावना किसी भी योजना की जान होती है। कृति एक साधन मात्र है। कृति की प्रेरणास्रोत,